बिहार विधान-सभा वादवृत्त

(भाग-1—कार्यवाही प्रश्नोत्तर)

मंगलवार, तिथि 28 जून, 1983।

विषय-सूची

	पृष्ठ
प्रश्नों के मौखिक उत्तर:—	
अल्पसूचित प्रश्नोत्तर संख्या—8 एवं 22	1—7
तारांकित प्रश्नोत्तर संख्या—80, 82, 85 एवं 88	8—20
परिशिष्ट(प्रश्नों के लिखित उत्तर):	21—62
दैनिक निबंध	63

टिप्पणी:—मंत्रियों एवं सदस्यों ने अपना भाषण संशोधित नहीं किया है ।

तारांकित प्रश्नोत्तर

छावनी की व्यवस्था।

*80. श्री वीरेन्द्र प्रसाद सिंह—क्या मंत्री, शिक्षा विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि—

(1) क्या यह बात सही है कि औरंगाबाद जिलान्तर्गत ओबरा थाना के ग्राम जीरा में अवस्थित प्राथमिक विद्यालय के एक कमरे का निर्माण ग्रामीणों ने अपने सहयोग से किया है, लेकिन कमरे की छावनी धनाभाव के कारण नहीं हो सकी है;

(2) यदि उपर्युक्त खंड का उत्तर स्वीकारात्मक है तो क्या सरकार उक्त कमरे की छावनी शीघ्र कराने का विचार रखती है, यदि 'नहीं' तो क्यों ?

श्री करमचन्द भगत—(1) सही स्थिति यह है कि औरंगाबाद जिला के ओबरा थानान्तर्गत ग्राम जीरा में अवस्थित प्राथमिक विद्यालय के लिए एक भवन का निर्माण ग्रामीणों द्वारा नहीं, बल्कि ग्रामीण अभियंत्रण संगठन द्वारा किया जा रहा है तथा उसकी छावनी का निर्माण शेष है।

(2) छावनी का निर्माण शीघ्र पूरा कराने के लिए कार्यपालक अभियन्ता, ग्रामीण अभियंत्रण संगठन, औरंगाबाद तथा जिला शिक्षा अधीक्षक, औरंगाबाद को आदेश दिया गया है।

अध्यक्ष—यह प्रश्न स्थगित हुआ था। आपने कहा था कि स्कूल है ही नहीं। यदि सरकारी विद्यालय होगा तो निश्चित रूप से सरकार विद्यालय बनवा देगी, ऐसा प्रोसिडिंग में है। यह वही विद्यालय है तो उसे कब तक बनवा देंगे ?

श्री करमचन्द भगत—दो महीने के अन्दर बनवा देंगे।

कोचिंग केन्द्र में सुधार।

*82. श्री रामदेव वर्मा—क्या मंत्री, शिक्षा विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि—

(1) क्या यह बात सही है कि सरकार द्वारा 1949 में 6,800 रुपये वार्षिक लागत पर पटना विश्वविद्यालय की तहत एक आई० ए० एस० कोचिंग केन्द्र की स्थापना की गयी थी;

(2) क्या यह बात सही है कि 1961 में सरकार ने इस केन्द्र को 6 लाख रुपये वार्षिक अनुदान देने का वादा करते वक्त यह शर्त लगायी थी कि इस केन्द्र में हरिजनों और आदिवासियों के उम्मीदवारों को नामांकित किये जायें एवं केन्द्र का स्तर ऊंचा उठाया जाय;

(3) क्या यह बात सही है कि 1966-67 में सरकार ने इस केन्द्र की अनुदान राशि 6,800 रुपये से बढ़ाकर 43,200 रुपये वार्षिक कर दी;

(4) क्या यह बात सही है कि चालू वर्ष के यू० पी० एस० सी० की परीक्षा में इस केन्द्र का एक भी उम्मीदवार आई० ए० एस० के लिए लिखित परीक्षा में सफल नहीं हो सका जबकि राज्य के इस केन्द्र से बाहर के चालीस उम्मीदवार चालू वर्ष में आई० ए० एस० की लिखित परीक्षा में सफल हुए हैं, यदि हां, तो क्यों तथा क्या सरकार इस केन्द्र की व्यवस्था की जांच करा कर उसमें सुधार लाने का विचार रखती है, यदि हां, तो कबतक, नहीं तो क्यों ?

श्री करमचन्द भगत—(1) उत्तर स्वीकारात्मक है।

(2) 1961 में क्या वादा किया गया था इसकी जानकारी नहीं है परन्तु केन्द्र का स्तर ऊंचा हो इसमें दो मत नहीं है।

(3) उत्तर स्वीकारात्मक है।

(4) सरकार इसकी शीघ्र जांच करायेगी।

श्री रामदेव वर्मा—खंड (2) के उत्तर में मंत्री महोदय ने कहा है कि जानकारी नहीं है लेकिन हरिजन तथा आदिवासी लड़कों के लिये आइ० ए० एस० की कोचिंग सेन्टर खोलने के लिये प्रस्ताव 1961 में बिहार सरकार को दिया गया था और कहा गया था कि उन लड़कों का एडमिशन करेंगे तो इन्स्टीच्युट को 6 लाख रुपया दिया जायगा। इसका क्या औचित्य है और अभी मंत्री महोदय कहते हैं कि जानकारी नहीं है, क्या वे दावे के साथ कहते हैं कि उनको जानकारी नहीं है ?

श्री करमचंद भगत—माननीय सदस्य 1961 के वादा के बारे में कह रहे हैं। यह संस्था पटना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत है और पटना विश्वविद्यालय अभी बन्द है, उसके डाइरेक्टर अभी यात्रा पर हैं। कागज मुझको पटना विश्वविद्यालय से ही मंगाना है जो नहीं मिल सका है इसलिये 1961 के वादा के बारे में निश्चित रूप से सरकार को जानकारी नहीं है।

अध्यक्ष—यह प्रश्न उस दिन भी आया था। आपने समय लिया था। हम एक दिन समय देते हैं और आपको जानकारी पटना विश्वविद्यालय से लेनी है तब आज कैसे कहते हैं कि समय चाहिये ?

श्री करमचंद भगत—डाइरेक्टर यात्रा पर चले गये हैं।

अध्यक्ष—यात्रा पर चले जांय उससे क्या ?

श्री करमचंद भगत—पटना विश्वविद्यालय में गर्मी की छुट्टी है।

अध्यक्ष—खंड (3) में दिया हुआ है कि क्या यह बात सही है कि 1966-67 में सरकार ने इस केन्द्र को अनुदान राशि 6,800 रुपये से बढ़ाकर 43,200 रुपये वार्षिक कर दी। यह तो आपके सचिवालय से गया होगा ?

श्री करमचंद भगत—इसका तो उत्तर मैंने स्वीकारात्मक दे दिया है।

श्री जनार्दन तिवारी—ये कहते हैं कि डाइरेक्टर यात्रा पर चले गये हैं।

श्री कर्पूरी ठाकुर—सदन मंत्री को जानता है, डाइरेक्टर को नहीं।

श्री लालू प्रसाद यादव—मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। यह बहुत गंभीर प्रश्न है। मंत्री महोदय जवाब दिये हैं कि डाइरेक्टर नहीं हैं तो क्या विधान-सभा डाइरेक्टर से पूछकर चलेगा ? इस तरह से कैसे काम चलेगा ?

अध्यक्ष—अभी विरोधी दल के नेता ने कहा है कि सदन मंत्री को जानता है, डाइरेक्टर को नहीं।

श्री रामदेव वर्मा—खंड (4) में मैंने पूछा है कि बिहार के 40 लड़के लिखित परीक्षा में सफल हुए हैं लेकिन इस केन्द्र का एक भी लड़का प्रतियोगिता में सफल नहीं हुआ है इसका उत्तर इन्होंने नहीं दिया है ?

श्री करमचंद भगत—इसके बारे में जांच की जायगी कि किस परिस्थिति में इस केन्द्र से एक भी लड़का सफल नहीं हुआ है जबकि 43,200 रुपये अनुदान दिया जाता है और इस बिन्दु पर जांच की जायगी कि किस रूप से इसका संचालन किया जाय ताकि बिहार के बच्चों को फायदा हो सकता है।

श्री कर्पूरी ठाकुर—इस केन्द्र का एक भी उम्मीदवार सफल नहीं हुआ तो इसके सुधार करने के लिये आपने कौन सा कदम उठाया है ?

श्री करमचंद भगत—इसकी व्यवस्था के बारे में जांच की जायगी कि किस परिस्थिति में यहां का एक भी विद्यार्थी सफल नहीं हुआ और जांच करने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि इसमें क्या सुधार किया जाय ताकि यहां के लड़के सफल हो सकें।

श्री कर्पूरी ठाकुर—सदन में प्रवेश करने के पहले और जवाब देने के पहले शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर नहीं थे तो कोई डिप्टी डाइरेक्टर या सीनियर प्रोफेसर के साथ बैठ-कर मंत्री महोदय को विचार-विमर्श कर लेना चाहिये था कि इस केन्द्र में क्या-क्या कमजोरियां हैं और सदन को उसके बारे में बतलाना चाहिए था कि अमुक-अमुक त्रुटियों को दूर करने के लिये सरकार उपाय करने जा रही है ?

श्री इन्दर सिंह नामधारी—अध्यक्ष महोदय, किसी ने आई० एन० एस० परीक्षा में सफलता प्राप्त नहीं की तो मंत्री महोदय यह बतायें कि पिछले पांच सालों में कितने लोग उक्त परीक्षा में सफल हुए ?

श्री करमचन्द भगत—पिछले पांच साल के बारे में प्रश्न तो नहीं पूछा गया है इसलिए उत्तर नहीं है।

श्री इन्दर सिंह नामधारी—आप श्याम नंदन किशोर, शिक्षा परामर्शी से क्यों नहीं पूछ लिए, अध्यक्ष महोदय, उत्तर नहीं आ रहा है ?

अध्यक्ष—सरकार निरूत्तर है।

श्री इन्दर सिंह नामधारी—अध्यक्ष महोदय, आप ऐसे मंत्रियों को प्लक कीजियें। अध्यक्ष महोदय, थोड़ा सा आपने चुस्त किया है, थोड़ा और कीजिए।

श्री जनार्दन तिवारी—अध्यक्ष महोदय, इन लोगों का कोचिंग क्लास चलाईये—

अध्यक्ष—उसमें आपको रखेंगे।

(हंसी)

श्री इन्दर सिंह नामधारी—अध्यक्ष महोदय, एक प्रश्न का ये उत्तर और दें कि मासिक फीस स्टूडेंट से कितनी ली जाती है ?

श्री करमचंद भगत—इसकी जानकारी अभी नहीं है।

श्री राम लखन सिंह यादव—अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि कितने लड़कों का नामांकन हुआ है और उसमें हरिजन आदिवासी कितने हैं और इन्स्टीच्यूट को चलाने में, कोचिंग क्लास चलाने में कौन-कौन टीचर हैं ?

श्री करमचन्द भगत—अध्यक्ष महोदय, इसकी जानकारी नहीं है।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी—अध्यक्ष महोदय, खण्ड (2) का जवाब उन्होंने अभीतक नहीं दिया और कोटे के मुताबिक हरिजन, आदिवासियों का नामांकन हुआ है कि नहीं यह हम पूछना चाहते हैं ?

अध्यक्ष—क्या करें, सदन बताये।

सदस्यगण—स्थगित कर दीजिये।

अध्यक्ष—हमारे साथ एक डिफिकल्टी है—होता क्या है कि पुनः स्थगित करने में कठिनाई हो जाती है और यह प्रश्न आ जायेगा उस दिन के प्रश्नों की सूची में सबसे आगे और जो दूसरे प्रश्नकर्ता का जो प्रश्न है वह नीचे चला जायेगा और यह चला आवेगा ऊपर।

श्री ब्रज किशोर नारायण सिंह—इसको स्पेशल कमिटी में जांच के लिए भेज दीजिये क्योंकि समूचे स्टेट के हित की बात है।

अध्यक्ष—43,000 रुपया तो इसको अनुदान मिलता ही है।

श्री जनार्दन तिवारी—हुजूर, 6 लाख रुपया सब खा गया होगा, यही बात है।

अध्यक्ष—माननीय मंत्री, एक काम कीजिए कि जो पूरक प्रश्न माननीय राम लखन सिंह यादवजी ने पूछा है कि नामांकन कितना हुआ, कितने लड़के एपीयर हुए, श्री इन्दर सिंह नामधारी ने जो पूछा है, नेता, विरोधी दल के श्री कर्पूरी ठाकुर ने जो पूछा है, तथा अन्य प्रश्नकर्ताओं ने जो पूछा है इन सब का एक विस्तृत उत्तर आप परिचालित कर दीजिये, यदि उनसे संतुष्ट नहीं रहेंगे तो फिर इसको अगली तिथि को लावेंगे।

श्री करमचंद भगत—ठीक है।

श्री सूरज मण्डल—आगे जो नामांकन होगा उसमें हरिजन आदिवासी के छात्रों को नामांकन करने का आदेश निश्चित रूप से देना चाहते हैं कि नहीं इसको भी बतलायें ?

विद्यालय भवनों का निर्माण।

*85. श्री ब्रजकिशोर सिंह—क्या मंत्री, शिक्षा विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि—

(1) क्या यह बात सही है कि सरकार के निर्णयानुसार प्रखंड के चार प्राथमिक विद्यालय भवन का निर्माण तथा पुराने विद्यालय भवन की मरम्मती की जानी चाहिए ;

(2) क्या यह बात सही है कि पूर्वी चम्पारण जिला स्थित पकड़ीदयाल तथा मधुबन प्रखंडों में अभी तक एक भी स्कूल भवन का निर्माण तथा मरम्मत का कार्य पूरा